www.thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : RTK/10/2014-16
सृष्टि संवत् 1960853117
विक्रम संवत् 2073
दयानन्दाब्द 193

सेवा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती

E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

वर्ष : 13 अंक : 25 रोहतक, 28 नवम्बर, 2016 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

प्रभु स्मरण के सात लाभ होते हैं

❑ डॉ० अशोक आर्य, जी. 7, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशाम्बी, जिला गाजियाबाद

परमपिता परमात्मा हम सबका, जन्मदाता है, वही हम सब का पालन करता है, वही हम सब का पोषण करता है तथा वह प्रभु ही हम सब का संहार अर्थात् मोक्षदाता है। भाव यह है कि हमारे जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त हमारा सब कुछ करने वाला वह प्रभु ही है। हम उसके आदेश के एक कदम भी अलग से नहीं चल सकते। जब हम उस प्रभु के आदेश के बिना चार साधन हैं। मोक्ष पाने के लिए संसार का प्रत्येक प्राणी मोक्ष पाने की इच्छा रखता है। यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है कि प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है। परम सुख है जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति। इस बंधन से छूटने पर ही परम सुख मिलता है। इसलिए सब प्राणी जन्म-मरण के बंधन से छूटकर मुक्ति पाने की कामना करते हैं। कामना तो सब करते हैं किन्तु इस मुक्ति के मार्ग को पाने के लिए जो उपाय बताये गए हैं, उनको करने का यत्न नहीं करते, उन पर चलने की प्रेरणा भी उनमें नहीं होती। परमपिता परमात्मा ने जीव को कर्म करने की स्वतंत्रता दी है। अत: कुछ कर्म हैं जिन के किये बिना मुक्ति का मार्ग नहीं मिल सकता। यह कर्म कौन से हैं, इन का वर्णन सामवेद के मन्त्र संख्या 51 में विस्तार से किया गया है। जो इस प्रकार है—

अशोक आर्य

प्र दैवोदासो अग्निर्देव इन्द्रो न मज्मना। अनु मातरं पृथिवी वि वाव्रते तस्थो नाकस्य शर्मणि।।
सामवेद 51।।

मानव अथवा जीव इस धरती पर जन्म लेकर अनेक प्रकार के कर्म करता है। अपने कर्म करने के पश्चात् वह मृत्यु को प्राप्त होकर यहाँ से लौट जाता है। यहां से लौटने के पश्चात वह मोक्ष में जाकर वहां के सुखमय जीवन को प्राप्त करता है। मन्त्र का अंतिम भाग अथवा उतरार्ध भाग ऊपर वर्णित के अनुरूप स्पष्ट करते हुए कहता है कि इस पृथ्वी पर जीव का निवास कभी भी स्थायी न होकर सदा अस्थायी ही होता है। अत: यहाँ से उसे निश्चित रूप से लौटना ही होता है। जैसे कोई मनुष्य प्रात:काल उठकर स्कूल पढ़ने को जाता है, तो कोई पढ़ाने को, कोई कार्यालय में काम करने को जाता है तो कोई कार्यालय से अपना काम निकलवाने को। इस प्रकार संसार के सब प्राणी अपने निश्चित कार्य के लिए घर से बाहर जाते हैं। यदि किसी को कोई अन्य कार्य नहीं है तो वह भ्रमण के लिए ही चला जाता है, किन्तु अपने निर्धारित कार्य की पूर्ति के पश्चात् वह अपने घर अथवा अपने निवास पर लौट आते हैं , बाहर ही नहीं रह जाते। ठीक इस प्रकार ही परमपिता परमात्मा ने हमें इस पृथ्वी पर भेजा है। यह हमारा अस्थायी निवास है। परमात्मा ने हमें यहाँ कुछ समय के लिए अस्थायी रूप से भेजा है। इस लिए यहाँ से हमारा लौटना निश्चित है। हमारा स्थायी निवास तो उस पिता के चरणों में है, जिसे ब्रह्मलोक कहते हैं। हमने जो यात्रा की है, जो कर्म किये हैं, उनके परिणाम स्वरूप हम यात्रा के, कर्म के कष्टों को सहने के परिणाम स्वरूप मोक्ष पाते हैं तथा फिर पूर्ण सुख व आनंद से रहते हैं।

यह जीवन एक यात्रा है तथा यात्रा के भी अपने कुछ नियम होते हैं, कुछ सिद्धांत होते हैं, यात्री को इन नियमों का, इन सिद्धांतों का यात्रा के समय ध्यान रखना होता है। यह नियम दो प्रकार के होते हैं—)

(1) यात्रा पर निकलने वाले व्यक्ति को यह ध्यान रखना होता है कि किस प्रकार से वह निकले कि उसकी यात्रा सरल, सुगम व सफल हो। इसके लिए उसे देखना होता है कि वह किस प्रकार के साधन अपना कर यात्रा करे कि उसे मार्ग में कम से कम कष्ट हों तथा मार्ग सफलता से कट जावे। उसे पता होना चाहिए कि अत्यधिक बोझ उसे थका देगा, वह सरलता से नहीं चल पावेगा। यह भी हो सकता है कि अति बोझ के कारण उसे मार्ग से ही लौटना पड़ जावे अथवा मार्ग में रुक-रुक कर यात्रा करनी पड़े, जिससे यथासमय वह अपने गंतव्य पर न पहुँच सकेगा। इसलिए वह अपनी यात्रा में कम से कम बोझ अथवा सामान रखने का यत्न करता है। हमारा जीवन भी एक यात्रा है। अत: यह यात्रा भी कर्म के ताने बाने में बंधी है। इस यात्रा के मार्ग में हमारी आसुरी प्रवृतियां काम, क्रोध आदि दुरित वासनाएं आदि बोझ हैं जो हमें इस जीवन यात्रा पर सुगमता से आगे नहीं बढ़ने देते। इन सब प्रकार के बोझों को अपने कर्मों के द्वारा कम करते हुए हम तेजी से अपने गंतव्य अर्थात् मोक्ष मार्ग पर बढें। यह मोक्ष ही हमारा स्थायी निवास है, जहाँ हमें लौटना है।

(2) यात्रा में सदा आराम नहीं होता, अनेक प्रकार के कष्ट भी इस यात्रा में सहन करने होते हैं। कहीं स्नान की व्यवस्था नहीं, तो कहीं नाश्ता नहीं मिलता, कहीं भोजन नहीं, तो कहीं जलपान के बिना ही रहना होता है। इस प्रकार यात्रा में कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना यात्री को करना होता है, तो भी यात्री किसी प्रकार अपना गुजारा करते हुए अपनी यात्रा की पूर्ति करता है। इस प्रकार ही हमारी जीवन यात्रा में हमारा ध्येय आराम न होकर कर्म होना चाहिए। वास्तव में ध्येय तो हमारा मोक्ष है, ध्येय के साधन हैं कर्म। अत: अपने जीवन में हम सदा निर्माणात्मक कर्म करते हुए निरंतर मोक्षमार्ग पर चलते चलें, तब तक चलते चलें, जब तक कि हमें हमारे ध्येय अर्थात् मोक्ष को न पा लें। हमारा मोक्ष स्थान तो ब्रह्मलोक ही है। यही हमारा अंतिम निवास है। इस स्थान पर पहुँचने के निर्धारित साधन निम्न हैं, जिन साधनों को अपना कर ही हम इस उद्देश्य की पूर्ति कर सकते हैं— (क) प्रभु का सेवक बनकर (ख) आगे ले जाने वाला बने (ग) खेल भावना से कर्म करें।

कुछ भी नहीं कर सकते तो हमारे भी उस प्रभु के प्रति कुछ कर्त्तव्य बनते हैं। उन कर्तव्यों का पालन करना हमारा पुनीत कर्तव्य होता है। यदि हम अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करते तो हम प्रभु के पुत्र कहलाने का अधिकार भी

क्रमश: पृष्ठ 2 पर.....

www.thearyasamaj.org

प्रभु स्मरण से सात लाभ.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

नहीं रखते। इन कर्तव्यों में प्रभु की स्तुति करना, प्रभु की प्रार्थना करना तथा प्रभु की उपासना करना मुख्य हैं। प्रभु स्तुति के अनेक प्रकार हैं, जिनमें से सात प्रकार की स्तुति अथवा स्तुर्ती से होने वाले सात प्रकार के लाभ का वर्णन सामवेद के मन्त्र संख्या 45 में इस प्रकार किया गया है—

एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे। प्रियं सतिष्ठमरतिन स्वध्वरं विश्वस्य दुतममृतम्।। सामवेद 45।।

मन्त्र में कहा गया है कि हे प्रभो! आप अग्नि के सामान सब को आगे ले जाने वाले हैं। मैं आपको नम्रता से पुकारता हूँ, क्योंकि प्रभु की आराधना नम्रता से ही संभव है। ज्ञान, धन व बल का गर्व करने वाला व्यक्ति कभी भी उस परमपिता परमात्मा का सच्चा आराधक नहीं बन सकता। प्रभु का आराधक बनाने के लिए गर्व को छोड़कर नम्रता को ग्रहण करना होगा। अन्यथा हम केवल भटकते रहेंगे, प्रभु से नहीं मिला सकेंगे। जब हम परमपिता परमात्मा की इस प्रकार की आराधना करते हैं तो हमें प्रभु के कुछ विशेषणों के रूप में कुछ लाभ प्राप्त होते हैं। मन्त्र में इस प्रकार के लाभों की संख्या सात बतायी गयी है। जो इस प्रकार है—

(1) आराधक में शक्ति का प्रवाह निरंतर चलता है—जिस प्रभु ने हमें इस संसार में भेजा है, वह प्रभु शक्ति को कभी गिरने नहीं देता, नष्ट नहीं होने देता। जब मनुष्य उस प्रभु से संपर्क करता है, उसकी आराधना करता है, उसकी स्तुति, उपासना करता है तो मनुष्य का संपर्क शक्ति के स्रोत उस प्रभु से जुड़ जाता है, जुड़ता ही नहीं उससे यह संपर्क निरंतर बना रहता है जिससे किसी का संपर्क होता है, उसमें जैसी शक्तियां होती हैं, वैसी ही शक्तियां (जो बुरी भी हो सकती हैं तथा लाभकारी भी), उपासक को मिलती हैं। इस प्रकार जब मानव प्रभु की आराधना करता है, उसके संपर्क में आता है तो जिस प्रकार की शक्तियां उस प्रभु में होती हैं, वैसी ही ईश्वरीय शक्तियों का प्रवाह मानव में हो जाता है।

(2) आराधक का मन सदा प्रसन्न रहता है—ऊपर बताया गया है की प्रभु आराधना से ईश्वरीय शक्तियां मिलाती हैं। ईश्वरीय शक्तियों को पाकर मानव अपने आपको धन्य समझता है तथा प्रसन्नता से भाव विभोर हो उठाता है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रभु आराधक सदा प्रसन्न रहता है। यह तो सब जानते ही हैं कि प्रसन्न व्यक्ति सदा स्वस्थ रहता है तथा धन धान्य से उसके कोष सदा भरे रहते हैं। इससे उसकी प्रसन्नता और भी बढाती है।

(3) आराधक को उत्कृष्ट ज्ञान मिलता है—परमपिता परमात्मा सब प्रकार के ज्ञान का आदि स्रोत होता है। जब हम परमपिता की प्रार्थना, उपासना पूर्वक स्तुति करते हैं तो वह प्रभु हमें अपनी गोदी में स्थान देकर हमें उत्तम ज्ञान देता है। इस प्रकार प्रभु आराधक को उत्तम से उत्तम ज्ञान देता है।

(4) आराधक को ब्रह्मानन्द मिलता है—प्रभु भक्ति से आराधक को ब्रह्मानन्द की प्राप्ति होती है। जब प्रभुभक्त अपनी आराधना के बल से प्रभु के साथ साक्षात्कार कर लेता है, प्रभु का साथ उसे मिल जाता है तो उसे असीम आनंद की अनुभूति होती है। अब उसके लिए प्रभु भक्ति के आनंद के सामने अन्य सब प्रकार के आनंद फीके दिखाई देते हैं। यह ही कारण है कि अब वह विषयों की ओर आकर्षित नहीं होता। ब्रह्मानंद के सामने उसे अन्य सब आनन्द तुच्छ दिखाई देते हैं। अत: वह विषयों से मिलने वाले रस से प्रीति को समाप्त कर ब्रह्मानंद में लीन होने का यत्न करता है, क्योंकि अब उसे विषयों से मिलने वाला आनंद ब्रह्मानंद की प्रतिस्पर्धा में कुछ भी दिखाई नहीं देता।

(5) आराधक सदा उत्तम कर्मों में लग जाता है—जब आराधक को ब्रह्मानन्द की प्राप्ति हो जाती है तो उसे किसी पर हिंसा करने की आवश्यकता नहीं रहती, सब कुछ उसे उस प्रभु की शरण मात्र से ही मिल जाता है। अत: वह हिंसा रहित होकर उत्तमोत्तम कर्मों में लीन हो जाता है। इससे संसार का उपकार होता है तथा उसे और भी अधिक प्रसन्नता तथा आनंद मिलता है।

(7) आराधक के पास असुर प्रवृतियां नहीं आतीं—मानव की शरीररूपी देवनगरी में जब आराधक की तपश्चर्या से देवगण इस नगरी के अन्दर घुसकर इसे सप्त-ऋषियों का आश्रम बना देते हैं तो असुर प्रवृतियाँ बलात रूप से इसमें घुस नहीं सकतीं, क्योंकि असुर प्रवृतियों का उत्पातक प्रभु उन्हें सदा इस देवगृह से दूर भगाता है, उन्हें पास नहीं आने देता, अन्दर घुसने देने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। तभी तो सातवें लाभ के रूप में प्रभु आराधक को सबसे बड़ा विजेता कहा गया है।

(7) आराधक सबसे बड़ा विजेता होता है—परमपिता परमात्मा मोक्ष का साधक होता है। वह अपने भक्तों को जन्म-मरण के बंधनों से मुक्त कर मोक्ष में ले जाता है। इस प्रकार यह आराधक मृत्यु के भय से सदा के लिए मुक्त हो जाता है। यह जो मुक्ति का मार्ग है, यह प्रभु आराधना से ही प्राप्त होता है। हम ऊपर बता चुके हैं कि प्रभु की आराधना नम्रता से होती है, अभिमान से नहीं। नम्रता से अभिमानादि दुष्ट वृतियों को पूर्णतया अपने वश में कर लेने से प्राप्त होती है। हम मन्त्र की भावना को तब ही आत्मसात कर यह सात लाभ पा सकते हैं जब हम नम्रता को ग्रहण कर स्वयं पर विजेता बनकर प्रभु आराधना में नम्रता के साथ निराभिमान हो कर जुटे रहेंगे। शत्रुओं पर तो अनेक लोग विजय कर लेते हैं, किन्तु अपने आप पर विजय कोई ही पा सकता है, जो अपने आप पर विजय पा लेता है, वह सब से बड़ा विजेता होता है। यह विजय प्रभु आराधना से ही संभव होती है। अत: आओ हम प्रभु भक्ति के इन सात लाभों से साक्षात्कार करने के लिए सप्त-ऋषियों को पाने के लिए तथा प्रभु शरण के अधिकारी बनने के लिए नम्रता पूर्वक प्रभु की आराधना करें।

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

6-13 नवम्बर, 2016। वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़, गुजरात में लगभग 160 शिविरार्थियों ने क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया। प्रतिदिन पूज्य स्वामी सत्यापति जी का ब्रह्म उपदेश, आचार्य ज्ञानेश्वर जी की क्रियात्मक योगाभ्यास कक्षा तथा प्रेरक प्रवचनों ने जहाँ शिविरार्थियों में ईश्वर भक्ति जागृत की वहीँ समाज-राष्ट्र-विश्व के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित किया।

आचार्य संदीप जी ने योगदर्शन, डॉ. सदगुणा जी ने ज्ञान-कर्म-उपासना, आचार्य सोमदेव जी ने शंका-समाधान, श्री चंद्रेश जी ने आत्मनिरीक्षण, ब्र. अरुण कुमार जी और वा. जयाबेन जी ने व्यायाम की कक्षाएं लीं। पुराने शिविरार्थियों के लिए गंभीर आध्यात्मिक विषयों की कक्षाएं थीं। सभी ने आश्रम के अग्निहोत्र प्रशिक्षण केंद्र में चलने वाले अखंड यज्ञ में आहुतियाँ दीं तथा अग्निहोत्र प्रदर्शनी का परिभ्रमण किया।

अनुभव सुनाते हुए शिविरार्थियों ने यहाँ के आध्यात्मिक वातावरण, प्राकृतिक सौंदर्य तथा प्रेम और सेवा भावना की प्रशंसा की, साथ ही कुछ दोषों को छोड़ने तथा कुछ गुणों को ग्रहण करने का संकल्प लेते हुए घर जाकर भी साधना-सेवा-स्वाध्याय करते रहने और अन्यों को प्रेरित करने का प्रण लिया।

—वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड, पो. सागपुर, जिला-साबरकांठा गुजरात, पिन - 383 307 दूरभाष 91-02770-287417, 9427059550

निमन्त्रण—पत्र

आप सभी को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास 119 गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली—110049 का 83वां वार्षिकोत्सव एवं 37वां चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ 27 नवम्बर 2016 रविवार से 18 दिसम्बर रविवार 2016 तक पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष भी विभिन्न भव्य सम्मेलनों के साथ हर्षोल्लास से सम्पन्न हो रहा है। चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ के ब्रह्मा वेदों के प्रकाण्ड पण्डित डॉ. महावीर; पूर्व कुलपति उ.स.वि.वि. हरिद्वार, होंगे। महायज्ञ में आर्यजगत के उच्चकोटि के साधु—सन्यासी, विद्वान्—मनीषी तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

इस अवसर पर आप स्वयं यजमान बनकर दूसरों को प्रेरित कर पुण्य के भागी बनें तथा यज्ञ में दान देकर गुरुकुल की सहायता कर कृतार्थ करें। आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा ८०जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है।

आप सभी अपने इष्ट—मित्रों एवं पारिवारिक जनों व्यक्तियों के साथ पधारकर धर्म लाभ प्राप्त करें।

निवेदक:—स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती एवं समस्त अधिकारी व सदस्य, वेदार्ष—न्यास, सम्पर्क सूत्र—9868855155, 9810420373 smdnyas99@gmail.com

www.thearyasamaj.org

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

नवम समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे....

प्रश्न 641. मुक्ति के विशेष उपाय कौन-कौन-से हैं?

उत्तर-जो मुक्ति चाहे वह जीवन मुक्त अर्थात् जिन मिथ्याभाषण आदि पापकर्मों का फल दु:ख है, उनको छोड़ सुखरूप फल को देने वाले सत्य-भाषणादि धर्म-आचरणअवश्य करे। जो कोई दु:ख को छुड़ाना और सुख को प्राप्त होना चाहे वह अधर्म को छोड़ धर्म को अवश्य करे। विशेष उपाय ये हैं—

1. **विवेक-**सत्पुरुषों के संग से विवेक अर्थात् सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म, कर्तव्य-अकर्तव्य का निश्चय अवश्य करें, पृथक्-पृथक् जानें और शरीर अर्थात् जीव-पंचकोशों का विवेचन करें।

2. **वैराग्य-**जो विवेक से सत्य-असत्य को जानना उनमें से सत्याचरण का ग्रहण और असत्य का आचरण का त्याग करना विवेक (वैराग्य) कहाता है। जो पृथ्वी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों के गुण, कर्म, स्वभाव को जानकर उसकी आज्ञा पालन और उपासना में तत्पर रहना, उससे विरुद्ध न चलाना, सृष्टि से उपकार लेना वैराग्य कहलाता है।

3. **षट्क सम्पत्ति-**(क) शम, (ख) दम, (ग) उपरति, (घ) तितिक्षा (ङ) श्रद्धा, (च) समाधान रूप कर्म करना।

4. **मुमुक्षुत्व-**जैसे क्षुधा, तृषातुर को सिवाय अन्न, जल के दूसरा कुछ भी अच्छा न लगना, वैसे मुक्ति के साधन और मुक्ति के सिवाय दूसरे किसी में प्रीति न होना। ये चार साधन हैं। साधनों के पश्चात् चार अनुबन्ध हैं—1. इन चार साधनों से युक्त जो पुरुष होता है, वही मोक्ष का **अधिकारी** है।

2. **सम्बन्ध-**ब्रह्म की प्राप्ति रूप मुक्ति प्रतिपाद्य और वेदादिशास्त्र प्रतिपादक को यथावत् समझकर अन्वित करना।

3. **विषयी-**सब शास्त्रों का प्रतिपादन-विषय ब्रह्म और उसकी प्राप्ति रूप विषय वाले पुरुष का नाम विषयी है।

4. **प्रयोजन-**सब दु:खों की निवृत्ति और परमानन्द को प्राप्त होकर मुक्ति सुख का होना।

तदनन्तर '**श्रवण-चतुष्टय**' को अपनाना। इसके चार अंग हैं—1. श्रवण, 2. मनन, 3. निदिध्यासन, 4. साक्षात्कार। सदैव तमोगुण, रजोगुण से अलग होकर सत्त्व गुणों को धारण करें।

सुखी जनों से मित्रता, दु:खी जनों पर दया, पुण्यात्माओं से हर्षित होना, दुष्टात्माओं में न प्रीति न वैर रखना। ये सब विशेष उपाय हैं।

प्रश्न 642. जीव के पांच कोशों का विवेचन करें?

उत्तर-अन्नमय कोश-'अन्नमय' जो त्वचा से लेकर अस्थिपर्यन्त का समुदाय पृथ्वीमय है। **प्राणमय कोश-**प्राण:-अर्थात् जो भीतर से बाहर जाता, 'अपान' जो बाहर से भीतर आता, 'समान' जो नाभिस्थ होकर सर्वत्र शरीर में रस पहुंचाता, 'उदान' जिससे कंठस्थ अन्न-पान खेंचा जाता और बल पराक्रम होता है, 'व्यान' जिससे सब शरीर में चेष्टा आदि कर्म जीव करता है। **मनोमय कोश-**जिसमें के साथ अहंकार, वाक्, पाद, पाणि, वायु और उपस्थ पांच कर्म-इन्द्रियां हैं। **विज्ञान-मय कोश-**जिसमें बुद्धि, चित्त, श्रोत्र, नेत्र, जिह्वा और नासिका-ये पांच ज्ञान-इन्द्रियां हैं, जिनसे जीव ज्ञानादि व्यवहार करता है। **आनन्दमय कोश-**जिसमें प्रीति, प्रसन्नता, न्यून आनन्द, अधिकानन्द, आनन्द और आधार कारण रूप प्रकृति है। ये पांच कोश कहाते हैं। इन्हीं से जीव सब प्रकार के कर्म, उपासना और ज्ञानादि व्यवहारों को करता है।

प्रश्न 643. जीव की कौन-कौन-सी अवस्थायें होती हैं?

उत्तर-1. जागृत, 2. स्वप्न, 3. सुषुप्ति तीन अवस्थायें होती हैं।

प्रश्न 644. जीव के कौन-कौन-से शरीर होते हैं?

उत्तर-1. स्थूल शरीर-जो यह दिखता है। **2. सूक्ष्म शरीर-**पांच प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच सूक्ष्म भूत और मन तथा बुद्धि-इन 17 तत्त्वों का समुदाय सूक्ष्म शरीर कहाता है। यह सूक्ष्म शरीर जन्म-मरण आदि में भी जीव के साथ रहता है। इसके दो भेद हैं—**(क) भौतिक-**जो सूक्ष्म भूतों के अंशों से बना है। **(ख) अभौतिक-**यह शरीर मुक्ति में भी रहता है। इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है। **3. कारण शरीर-**जिसमें सुषुप्ति अर्थात् गाढ़ निद्रा होती है, वह प्रकृति रूप होने से सर्वत्र विभु और सब जीवों के लिए एक है। **4. तुरीय शरीर-**इसमें समाधि से परमात्मा के आनन्द स्वरूप में जीव मग्न होते हैं।

क्रमश: अगले अंक में....

अजीब पहेली

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य

गतांक से आगे....

तीसरी बैठक

प्रभुभक्ति के भजन के बाद महात्मा जी ने प्रवचन प्रारम्भ करते हुए कहा-सत्संगी बन्धुओ! एक विशेष घटना के कारण संवेदन के पिता की मौत को लेकर हमने यह चर्चा आरम्भ की है। पंजाब में आतंक और भय से वातावरण बदल गया है। जिसके कारण हजारों मौतें हो चुकी हैं, इस क्रिया-प्रतिक्रिया से हजारों परिवार उजड़ गए हैं। इस स्थिति से एक विचारशील के मन में अनेक प्रकार के प्रश्न उभरते हैं। उनमें से दार्शनिक प्रश्नों की चर्चा में जन्म, मरण शब्द पर पिछली बैठक में विचार किया था। आइए! इस चर्चा को और आगे बढ़ायें।

आज जिस जीवन को हम बिता रहे हैं, उसे सफल होने के लिए उसके रहस्य को समझना बहुत जरूरी है, क्योंकि हमारा जीवन जन्म से प्रारम्भ होता है, जो कि पहली सांस से अन्तिम सांस तक चलता है। इसमें यथासमय जरूरत के अनुसार खान-पान, रहन-सहन, वस्त्र-धारण, अन्य व्यवहार्य वस्तुओं का बर्ताव, शिक्षा, चिकित्सा, यथायोग्य-यथापेक्षित रिश्ते-नातेदारों, मित्रों और कारोबारियों के साथ जो व्यवहार चलता है, उसको हम जीवन कहते हैं। अत: जीवन को अच्छा बताने के लिए जहां खान-पान, रहन-सहन, परस्पर बर्ताव, बोलचाल के राज को जानना बहुत जरूरी है [क्योंकि जीवन इन सबका सांझा रूप ही है। जीवन के इस रूप के साथ ही साथ], वहां [वृद्धों की] स्वाभाविक मृत्यु के साथ अकस्मात् घटने वाली मृत्यु की घटना और उसकी विवेचना को समझना भी आवश्यक है। अन्यथा गौतम बुद्ध या बालक मूलशंकर की तरह रहस्य स्पष्ट न होने से एकदम पासा भी पलट सकता है। तभी तो अनेक घबराकर अपनी मौत आप बुला बैठते हैं, क्योंकि मनुष्य एक परस्परापेक्षी सामाजिक प्राणी है। अत: कई बार परिवार के किसी एक विशेष सदस्य के उठ जाने पर सारा परिवार एकदम उजड़ जाता है, क्योंकि—

आज विज्ञान ने जहां अपनी अनेक उपलब्धियों से मानव समाज का जीवन सुख-सुविधाओं से भर दिया है, वहाँ भौतिक विज्ञान द्वारा बनाए गए यन्त्रों और यानों की आए दिन होने वाली दुर्घटनाओं से मौत खिलौना बनकर रह गई है। तभी तो आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं समाचार-पत्रों में आए दिन इसके समाचार सामने आ आ रहे हैं। इसके साथ दैविक प्रकोप, युद्ध, पारस्परिक क्लेश-द्वेष-स्वार्थ और बदले की भावना के कारण भी अनेक मौतें होती रहती हैं जिसका ताजा उदाहरण पंजाब, कश्मीर, असम की घटनायें तथा दंगों की वारदातें हैं। अत: हमारे आस-पास केवल किसी की भगवान् की व्यवस्था के अनुसार स्वाभाविक मृत्यु ही नहीं होती, अपितु अनेक अकस्मात् दुर्घटनाएं भी होती हैं। ये मौतें अपनी या दूसरों की गलतियों के कारण या जानबूझकर भी होती हैं। जैसे कि भोपाल के यूनियन कारबाईड कारखाने से जहरीली गैस रिसने की दुखद घटना 3 दिसम्बर 1984 को प्रात: ही प्रात: हुई। जिसके प्रभाव से तीन हजार लोगों की इहलीला समाप्त हो गई। अपंग, रुग्ण होने वालों की संख्या एक लाख से कम नहीं रही। यह दुर्घटना स्पष्ट रूप से इन्सानी लापरवाही का परिणाम है। ऐसे ही कनिष्क विमान की दुर्घटना जानबूझकर किए षड्यंत्र का परिणाम है। ऐसी स्थिति में भाग्य, लिखी को बीच में नहीं लाना चाहिए, क्योंकि इसका यह कारण स्पष्ट है। पुनरपि केवल भाग्य का खेल समझ करके ही आज दिल को संतोष देना 'बिल्ली को देखकर कबूतर आंख बंद करने' के ही समान है। इसलिए मृत्यु और तज्जन्य वियोग वेदना के सम्बन्ध में कुछ विचारना एवं जानना बहुत जरूरी हो जाता है।

वियोग-किसी की मृत्यु के अवसर पर वियोग, बिछोह शब्द का भी प्रयोग होता है। जैसे कि बाह्य रूप से यह बात सामने आती है कि कोई किसी परिवार, मित्रमण्डली और किन्हीं सम्बन्धियों से जुदा हो जाता है। वैसे ही विचारने पर यह बात सामने आती है कि सूक्ष्म रूप से भी एक आत्मा अपने पूर्व प्राप्त शरीर, इन्द्रिय और मन से वियुक्त होती है। तभी तो हम देखते हैं कि एक मृतक काया वहीं पड़ी होती है, जो न पहले की तरह बोलती है और न ही डोलती है। इसी स्थिति को देखकर ही किसी ने कहा है—

अपने गृह को छोड़ चला यह,
नाते-रिश्ते तोड़ चला यह,
सब से मुख मोड़ चला यह।

इस सारे विवेचन का यह निष्कर्ष है कि जो वस्तु जिस रूप में बनती है, उसके उस रूप का बिखराव ही उसकी मौत कही जा सकती है।

क्रमश:

www.thearyasamaj.org

स्वास्थ्य-चर्चा... बहुत ही आवश्यक है दातुन के फायदों को जानना

ब्रश से भी पहले से दांतों को साफ रखने के लिये इस्तेमाल किये जाने वाले दातुन के फायदों के बारे में जानकर आप शायद टूथब्रश की बजाय दोबारा दातुन का ही इस्तेमाल करने लगेंगे।

1. दातुन के फायदे-आज लगभग हर घर में दांत साफ करने के लिए लोग टूथब्रश का ही इस्तेमाल करने लगे हैं। लेकिन ब्रश से भी पहले से दांतों को साफ रखने के लिये इस्तेमाल किये जाने वाले दातुन के फायदों के बारे में जानकर आप शायद टूथब्रश की बजया दोबारा दातुन का ही इस्तेमाल करने लगेंगे। तो चलिये जानें की भला ऐसा क्या है कि पुराने लोग आज भी दातुन को ही वरीयता देते हैं।

2. धार्मिक दृष्टि से दातुन का महत्त्व-दातुन न केवल सेहत व बौद्धिक क्षमता के लिए बेहतर है बल्कि धर्म और अध्यात्म की दृष्टि से भी बेहतर माना जाता है। यही वजह है कि व्रत, त्यौहार वाले दिन बहुत से लोग ब्रश की बजाय दातुन से दांत साफ करते हैं। धार्मिक दृष्टि से दातुन का महत्त्व इसलिए भी माना जाता है, क्योंकि दातुन जूठा नहीं होता जबकि टूथब्रश हर दिन नया प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

3. आयुर्वेद और दातुन-आयुर्वेद में वर्णित दंतधावन विधि में अर्क, न्यग्रोध, खदिर, करञ्ज, नीम, बबूल आदि पेड़ों की डंडी की दातुन करने की सलाह दी जाती है। दरअसल आयुर्वेद में मुख प्रदेश को कफ का आधिक्य स्थान कहा जाता है। ऐसे में सुबह का काल भी कफ प्रधान होता है व पूरी रात सोने के कारण मुंह के अंदर कफ जमा हो जाता है। इसलिए शास्त्रों में कफ दोष का नाश करने वाले कटु, तिक्त एवं कसैला प्रधान रस वाली दातुन का प्रयोग करने को कहा जाता है।

4. टूथपेस्टों से बेहतर-आजकल इस्तेमाल किये जाने वाल टूथपेस्टों में से काफी में नमक एवं अम्ल रस भी मिलाया जाता है। अम्ल या लवण रस दांतों को तो साफ कर देते हैं, लेकिन यह रस हमारे मसूड़ों को क्षति पहुंचा सकते हैं, जबकि दातुन में ऐसी कोई समस्या नहीं होती है।

5. दांत ही नहीं पेट के लिये भी लाभदायक-जब आप दातुन बनाने के लिए दांतों से टहनी को चबाते हैं तो उस समय बनने वाले रस को थूकने के बजाए निगल लें। इससे आंतों की सफाई होती है और रक्त भी साफ होता है, साथ ही त्वचा संबंधी रोग भी नहीं होते हैं।

6. नीम-आयुर्वेद में बताया गया है कि नीम का दातुन केवल दांतों को ही स्वस्थ नहीं रखता, बल्कि इसे करने से पाचन क्रिया ठीक होती है और चेहरे पर भी निखार आता है। यही वजह है कि आज भी बहुत से पुराने लोग नियमित नीम की दातुन का ही इस्तेमाल करते हैं।

7. बेर-आयुर्वेद के अनुसार बेर के दातुन से नियमित दांत साफ करने

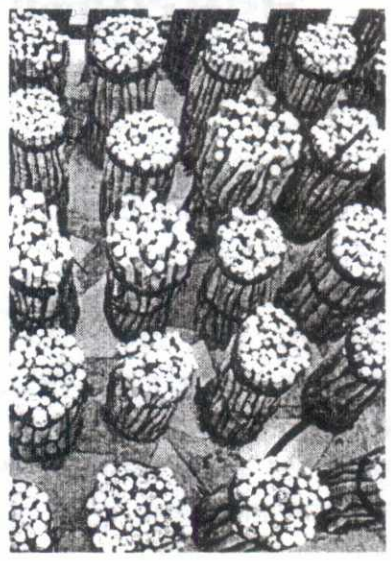

पर आवाज साफ और मधुर होती है। इसलिए जो लोग वाणी से संबंधित क्षेत्रों में रुचि रखते हैं या इस क्षेत्र से जुड़े हैं, उन्हें बेर के दातुन का नियमित इस्तेमाल करना चाहिए।

8. बबूल-आयुर्वेद में उल्लेख है कि दातुन न सिर्फ आपके दांतों को चमकाता है बल्कि आपकी बौद्धिक क्षमता और स्मरण शक्ति को भी बढ़ता है। मसूड़ों और दांतों की मजबूती के लिए बबूल के दातुन से दांत साफ करने चाहियें। ये दांतों और मसूड़ों दोनों को अच्छा रखता है।

9. कैसे करें दातुन-दातुन को ऊपर के दांतों में ऊपर से नीचे की ओर और नीचे के दांतों में नीचे से ऊपर की ओर करना चाहिये। इससे मसूड़े मजबूत होंगे और पायरिया की समस्या भी नहीं होगी। नीम की दातुन नेचुरल माउथफ्रेशनर का भी काम करती है और इसे करने से मुंह से दुर्गन्ध नहीं आती। दातुन को आप सुबह पांच मिनट से लेकर 15 मिनट तक किया जा सकता है।

बिस्तर पर पेशाब कर देने की बच्चों की समस्या

चारपाई, चौकी अथवा जमीन पर लेटकर सोया हुआ बच्चा जब सोते-सोते मूत्र विसर्जन कर बैठता है और ऐसा प्राय: होता है, तब यह रोग है और इसे नाम दिया गया है, बैडबीटिंग या 'शैया मूत्र।'

वैद्यराज धर्मदत्त जी ने अपने चिकित्सा शास्त्र में कहा है कि बालक में दो वर्ष की आयु तक मूत्र पर नियन्त्रण हो जाता है, फिर भी किसी-किसी में ऐसा नहीं होता, जिससे रात को सोते समय वह अनजाने मूत्र त्याग कर बैठता है जिसका पता उसे बाद में लगता है। देखा जाता है कि ऐसे बालक का मानस संस्थान कुछ दुर्बल होता है।

नाड़ी मंडल (नर्वस सिस्टम) निर्बल तथा क्षोभशील होता है। उसके पेट में कीड़े हो सकते हैं। यदि गुर्दे में पीड़ा हो तब भी ऐसा हो जाता है। मूत्र में जीवाणुओं की उपस्थिति या अम्लीयता भी शैया मूत्र की समस्या उत्पन्न कर सकती है।

अनियंत्रित होकर क्रोध करने, हाथ-पैर मारने और चीखने-चिल्लाने से प्राणतत्त्व की हीनता और मानसिक दुर्बलता उत्पन्न होकर शैयामूत्र की समस्या उत्पन्न करते हैं। कई मातायें बच्चे को शीघ्र हृष्टपुष्ट बनाने की चाह में उसे दूध का अत्यधिक सेवन कराती रहती है। जिससे बदहजमी, दस्त, वमन और शैया मूत्र की समस्याएँ सामने आ सकती हैं। कुछ बालकों को सोते समय अपनी जननेन्द्रिय उत्तेजित करने की आदत बन जाती है, इससे भी शैयामूत्र की समस्या सामने आ सकती है। ध्यान रखें, बच्चे के लिए पूरी नींद आवश्यक है। पर्याप्त नींद लेते रहने से उसका तन-मन सम्यक् रूप से विकसित होता है। साथ ही उसे आहार, दूध, जल आदि पर्याप्त मात्रा में देते रहना चाहिए। उसकी स्वच्छता का ध्यान रखा जाना चाहिए। सायं 6 बजे के बाद शैयामूत्र ग्रस्त बच्चे को तरल पदार्थों का सेवन तो बिलकुल न कराया जाये अथवा कम से कम दें।

शैया मूत्र पर अनुभव सिद्ध योग-वैद्य बालमुकुन्द शास्त्री का यह योग शैयामूत्र पर बड़ा अच्छा काम करता है। इसका नाम है 'नवकिरणवटी'।

घटक द्रव्य-बबूल की छाल और जामुन की छाल-समान भाग लेकर दोनों का घनसत्व बना लें। इन दोनों का मिश्रित घनसत्व 30 ग्राम, शुद्ध शिलाजीत 30 ग्राम, अश्वगंधा चूर्ण 20 ग्राम, बंगभस्म 20 ग्राम, शुद्ध कुचला 10 ग्राम।

प्रत्येक एकत्र कर गिलोय और अश्वगंधा क्वाथ की दो-दो भावना देकर दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना लें। यही है, 'नवकिरणवटी'।

मात्रा-एक-दो गोली प्रात: सायं दूध या जल के साथ दें।

एक-दो माह तक प्रयोग करने से बच्चा बिस्तर पर पेशाब करना बन्द कर देता है।

समझें महत्त्व उपवास का

इसमें कोई शक नहीं कि उपवास का अपना एक खास महत्त्व है। धार्मिक दृष्टि से भी और स्वास्थ्य संबंधी दृष्टि से भी। वस्तुत: धार्मिक दृष्टि से विभिन्न उपवासों का जो प्रावधान रखा गया है, वह निरर्थक नहीं है।

सच तो यह है कि कभी-कभी उपवास रखने से आपके पाचन तंत्र और शरीर के अन्य तंत्रों को काफी आराम मिलता है। वैसे अधिकतर धार्मिक उपवासों में पानी पीने का प्रावधान है, पर कुछेक ऐसे उपवास हैं, जिनमें पानी भी नहीं पिया जाता। जो महिलाएं सेहत और पाचन तंत्र को विश्राम देने की मंशा से उपवास रखना चाहती हैं, उन्हें इस दौरान पानी जमकर पीना चाहिए। अपनी सुविधा अनुसार आप सप्ताह में या पखवाड़े में एक दिन का उपवास रख सकती हैं। हां, उपवास के दौरान ज्यादा शारीरिक श्रम करने से बचें।

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक की सदस्यता ग्रहण कर तथा धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' को सहयोग राशि भेजकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनिये।
सम्पर्क-01262-216222, मो० 08901387993

www.thearyasamaj.org

गाय, गंगा, गायत्री की अन्यों से विशेष मान्यता क्यों?

❑ खुशहालचन्द्र आर्य

गाय, गंगा, गायत्री, ये तीनों अपने-अपने स्थान पर सबसे श्रेष्ठ, सर्वोत्तम व सर्वोच्च हैं। इनको हिन्दू धर्म यानि वैदिक धर्म में बहुत बड़ा महत्त्व ही नहीं बल्कि पूज्य माना गया है। हिन्दू धर्म ने जिन-जिन को मान्यता दी है, वह उनके गुणों व उनके महत्त्व को देखकर दी है। जैसे वृक्षों में पीपल, पौधों में तुलसी, पशुओं में गाय, पक्षियों में हंस, पहाड़ों में हिमालय, नदियों में गंगा, वैदिक मंत्रों में गायत्री। इन सबके पीछे इनके गुणों का पूरा इतिहास छुपा हुआ है। हम यहां केवल गाय, गंगा व गायत्री की मान्यता क्यों है, इसका संक्षिप्त वर्णन करते हैं।

1. गाय-गाय को ईश्वर ने मनुष्य जाति को एक पशु के रूप में जैसे अन्य पशु भैंस, घोड़ा, बकरी, हाथी दिया है वैसे नहीं दिया बल्कि एक उपहार के रूप में दिया है, जिसको देकर ईश्वर ने मनुष्य जाति पर बड़ा उपकार किया है। कारण गाय मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा साथी या सहयोगी है जिससे मनुष्य अपने जीवन को उन्नत व समृद्धिशाली बनाता है, जिसके कारण वह अपने मन, बुद्धि, शरीर व आत्मा को बलिष्ठ तथा पवित्र बनाता है। गाय से उत्पन्न सभी पदार्थ ही नहीं बल्कि गाय का रोम-रोम मनुष्य के लिए लाभकारी है। गाय एक चलती-फिरती फैक्ट्री है जिसका उत्पादन सस्ता व सुलभ है। कम परिश्रम में अधिक लाभ, गाय मनुष्य को देती है। गाय से अनेक लाभ हैं जिनमें कुछ लाभ यहाँ लिखते हैं।

गाय के दूध, घी, मक्खन व पनीर से अनेक किस्म की मिठाइयां बनती हैं जिनको खाकर मनुष्य स्वयं आनन्दित होता है तथा अपने अतिथियों व बरातियों को भी आनन्दित करता है। गाय के गोबर व मूत्र से उच्चतम खाद बनती है जिससे उत्पन्न हुआ अनाज स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है और जमीन भी उर्वरा होती है। कैमिकल से बनी यूरिया खाद से गाय के गोबर व मूत्र से बनी खाद कहीं अच्छी होती है। यूरिया खाद से जमीन की उर्वरा शक्ति हर साल कम होती जाती है जबकि जैविक खाद से जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ती जाती है। जब से भारत में यूरिया खाद का प्रयोग होने लगा है तभी से मात्रा में चाहे अनाज अधिक पैदा होने लगा हो परन्तु स्वादिष्ट व गुणयुक्त न होने से भारतीयों का स्वास्थ्य कमजोर हुआ है। भारतवर्ष एक कृषिप्रधान देश है। यहाँ की 70 प्रतिशत जनता गांवों में रहकर कृषि करती है। देश में जब से यूरिया खाद का प्रयोग अधिक हुआ है तब से देश को बड़ी हानि उठानी पड़ी है। खुशी की बात है कि अब कुछ वर्षों से सरकार तथा जनता का ध्यान यूरिया खाद का प्रयोग कम करने में और जैविक खाद का प्रयोग बढ़ाने में हुआ है। ईश्वर की कृपा बनी रही तो भविष्य में इस भावना को बल मिलेगा। इसके अलावा गाय के गोबर व मूत्र से कई प्रकार के सामान बनते हैं। जिनमें साबुन, सैपो, अगरबत्ती व फिनाईल आदि मुख्य हैं। गाय के गोबर व मूत्र से कई किस्म की दवाइयां बनती हैं, यहां तक कि कैंसर की दवाई भी बनती है। इनसे बनी दवाइयां काफी उपयोगी सिद्ध हुई हैं। गाय का मूत्र नित्य सेवन करने से मनुष्य काफी बीमारियों से बच सकता है। यदि हम गोरक्षा करना चाहते हैं तो हमें गाय द्वारा उत्पादित खाद, सामान तथा दवाइयों का प्रयोग अधिक करना होगा जिससे गाय की उपयोगिता बढ़ेगी। यदि हम एक बूढ़ी गाय या बैल के गोबर और मूत्र का प्रयोग भलीभांति करें तो हम बूढ़ी गाय या बैल से नित्य पचास रुपये कमा सकते हैं और उनके ऊपर नित्य का खर्च अधिक से अधिक तीस रुपये होगा। इस प्रकार एक बूढ़ी गाय या बैल से हम कम से कम बीस रुपये नित्य कमा सकते हैं। यदि ऐसी व्यवस्था सरकार या संस्थाओं द्वारा हो जाये तो कोई भी किसान उनको कटने के लिए कसाइयों को नहीं बेचेगा, तभी तो गोवंश की रक्षा होनी संभव है कारण दूध देने वाली गाय और हल चलाने वाले बैल को तो कोई बेचता नहीं।

सबसे बड़ी खूबी गाय में यह है कि गाय की चमड़ी में एक ऐसा आकर्षण है कि वह सूर्य की किरणों से एक प्रकार की ऊर्जा खेंचती है और वह ऊर्जा उसके दूध में आने से पीने वालों को बड़ा लाभ होता है। यही कारण है कि गाय के घी में जो एक पीलापन दिखाई देता है, वह सूर्य की किरणों का ही अंश है। गाय के दूध में भी कुछ पीलापन होता है, उसका कारण भी यही है। इस प्रकार गाय अनेक किस्मों से मनुष्य के लिए लाभकारी है, जिसका पूरा विवरण करना भी असम्भव है। ऐसे उपयोगी एवं लाभकारी पशु को हम काटकर खाते हैं या काटने के लिए बेच देते हैं यह मानवता के ऊपर एक बड़ा कलंक है। हमें ऐसे कुकृत्यों से सदा बचना चाहिए। तभी हम मानव कहलाने के अधिकारी बनेंगे।

2. गंगा-गंगा नदी सब नदियों से पवित्र व श्रेष्ठ है, इसमें कोई सन्देह नहीं। इसके पीछे एक बहुत बड़ा रहस्य है, वह यह है कि इसके पानी में कभी भी कीड़े नहीं पड़ते जबकि अन्य नदियों के पानी में कीड़े बहुत जल्दी ही पड़ जाते हैं। इसके पीछे कारण यह है कि गंगा नदी हिमालय पर्वत के गोमुख से निकलकर हिमालय के अन्दर ही अन्दर कई किस्म की जड़ी-बूटियों से स्पर्श करती हुई आती है, इसलिए जड़ी-बूटियों के प्रभाव से गंगा का पानी इतना पवित्र व रोगविनाशक हो जाता है जिसमें कीड़ा नहीं पड़ता। पर गंगा में नहाने से शरीर शुद्ध होता है परन्तु आत्मा शुद्ध नहीं होती। आत्मा की शुद्धि तो शुभकर्म करने, आचरण पवित्र रखने तथा ईश्वर की उपासना करने से ही होगी। इसलिए हमें गंगानदी के प्रति किसी प्रकार का अन्धविश्वास नहीं पालना चाहिए। कईअन्धभक्त गंगा के पास खड़े होकर हाथ जोड़ते हैं, पैसे फैंकते हैं, यह सब निरर्थक है, केवल एक अंधविश्वास है और कुछ नहीं।

3. गायत्री-वैसे तो वेदों के सभी मंत्र सार्थक एवं उपयोगी हैं परन्तु गायत्री मंत्र अन्य मंत्रों से अधिक लाभदायक हैं, इसीलिए इसको गुरुमन्त्र व महामन्त्र भी कहा गया है। अन्य मन्त्रों में तो हम किसी में धन-वैभव के स्वामी होने की याचना की है, किसी में अपने दु:खों, दुर्गुणों, दुर्व्यसनों को दूर करके अच्छे गुण-कर्म, स्वभाव की प्राप्ति के लिए याचना की है, किसी में परिवार को सुखी बनाने की याचना की है, परन्तु गायत्री मंत्र में सुबुद्धि प्राप्ति की याचना की है जो सर्वोत्तम याचना है। सुबुद्धि आ जाने से बाकी सभी चीजें स्वयं ही आ जाती हैं इसलिए गायत्री मंत्र का अन्य मन्त्रों से अपना अलग ही महत्त्व है, इसलिए गायत्री मंत्र को वैदिक मंत्र (हिन्दू धर्म) में अपना एक अलग ही स्थान प्राप्त है।

संपर्क-गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7, 033-22183825, 64505013, ऑफिस-26758903

गुरुकुल कुरुक्षेत्र परिवार ने कानपुर रेल हादसे पर जताया शोक

कुरुक्षेत्र, 22 नवंबर 2016 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी एवं समस्त गुरुकुल परिवार ने कानपुर रेल हादसे पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए, इस हादसे में मारे गये लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की। गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी ने प्रैस को जारी विज्ञप्ति में कानपुर रेल हादसे में मारे गये लोगों एवं उनके परिजनों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए केन्द्र व राज्य सरकारों से मृतकों के परिजनों को उचित मुआवजा एवं घायलों को उचित उपचार देने की मांग की है। साथ ही उन्होंने कहा कि भविष्य में ऐसे भयावह हादसे न हो इसके लिए रेल मंत्रालय उचित कदम उठाए।

बता दें कि शनिवार की रात इंदौर-पटना एक्सप्रेस ट्रेन दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी जिसमें 146 यात्रियों की मौत हो गई और 300 से अधिक अस्पतालों में उपचाराधीन है। कबाड़ में बदल चुके ट्रेन के कोच से सोमवार को भी 11 क्षत-विक्षत शव निकाले गये और अभी भी राहत कार्य जारी है। इस अवसर पर गुरुकुल के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, सह-प्राचार्य शमशेर सिंह सहित समस्त आचार्यगण, शिक्षकगण, ब्रह्मचारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

बीड़ी, शराब, सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे सदैव दूर रहें।

www.thearyasamaj.org

सम्पादक के नाम पत्र

20-22 अक्तूबर, 2016
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन,
काठमाण्डो, नेपाल,

समादरणीय श्रीयुत

सादर नमस्ते।

ईश्वरकृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आमंत्रण पर अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने हेतु 19 अक्तूबर को नेपाल की राजधानी काठमाण्डो पहुंचा। सम्मेलन में भारत के 15-20 राज्यों के हजारों की संख्या में तथा विदेशों से भी सैकड़ों आर्यों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। सभा के अधिकारियों तथा नेपाल के स्थानीय कार्यकर्त्ताओं के परम पुरुषार्थ से, कुछ अव्यवस्थाओं को छोड़कर सम्मेलन आशातीत सफल रहा और अविस्मरणीय बन गया, नेपाल में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु भूमि अधिग्रहण करके, उस पर विशाल भवन बनाकर बहुआयामी केन्द्र व स्थापना करने की योजना बनायी गयी है, तदर्थ धन राशि भी संग्रह की गई है।

सामान्य रूप से नेपाल के लोगों में सरलता, स्वामिभक्ति, कर्त्तव्यनिष्ठा, समर्पण, त्याग-तपस्या आदि विशेष गुण पाये जाते हैं, इन्हीं के कारण आज समस्त भारत में इन्हें अपने घरों, कारखानों, सोसायटियों आदि संस्थानों में आरक्षण के रूप में रखा जाता है। अशिक्षा, निर्धनता, कल्पित देवी-देवताओं की ईश्वर रूप में पूजा, अंधविश्वास, पाखण्ड से युक्त निरर्थक-अनर्थक कर्मकाण्डों, छुआछूत आदि अनेक प्रकार के दोषों के कारण इस देश का जितना विकास होना चाहिए था, नहीं हो पाया, बल्कि विश्व में एक ही हिन्दू राष्ट्र था, वह भी समाप्त हो गया। यद्यपि भारत की तरह नेपाल विदेशी आक्रान्ताओं के पराधीन नहीं रहा, किन्तु परोक्ष रूप से न केवल पाश्चात्य देशों ने बल्कि भारत ने भी अपने पड़ोसी, एक मात्र हिन्दू राष्ट्र की उन्नति करने, इसे सशक्त, समृद्ध बनाने हेतु विशेष प्रयास नहीं किया, बल्कि शोषण ही किया गया। आज चीन, नेपाल को विशेषरूप सहायता करके, राजनैतिक दृष्टि से अपने पक्ष में करने का प्रयास कर रहा है, जिसके दूरगामी भयंकर दुष्परिणाम होंगे।

आज इक्कीसवीं शताब्दी में भी नेपाल में शान्ति, सुख, समृद्धि, स्वर्ग आदि की प्राप्ति के लिए, पूजा, भक्ति, अर्चना आदि के नाम से अत्यन्त मूर्खता पूर्वक, हिंसक, घिनौना, क्रूर, आसुरी, पैशाचिक, घृणित परम्परायें प्रचलित हैं, जिनको देख, सुन, पढ़कर हृदय सिहर जाता है। उदाहरण के लिए एक ही दिन में, खुले मैदान में, हजारों की संख्या में मूक भैंस आदि पशुओं की निर्मम, गडांसों से हत्या की जाती है, जिसके परिणाम स्वरूप खून की नदियां बह जाती हैं। ऐसे ही अन्य अन्धविश्वास, पाखण्ड पूर्वक क्रिया-काण्डों को देखकर नई पीढ़ी नास्तिकता, स्वच्छन्दता, भोगपरायणता की ओर अग्रसर होती जा रही है, यही स्थिति भारत की है, नेपाल की क्या बात करें।

कुछ उत्साही, आशावादी, पुरुषार्थी, कर्मठ, कार्यकर्त्ताओं को छोड़ देवें, शेष अधिकांश वैदिक धर्म में आस्था रखने वाले आर्य सज्जनों में आर्य संस्कृति के प्रचार-विस्तार-विकास-गुणवत्ता के विषय में निराशावादी भावना घर कर गई है। ऐसे व्यक्ति आध्यात्मिक दृष्टि से 'नास्तिक' ही कहलाते हैं और आशावादी 'आस्तिक' कहलाते हैं। सर्वप्रथम इस निराशावाद को समाप्त करना चाहिए। यह निराशा अकर्मण्यता, उपेक्षा, दोष दर्शन, निन्दा, स्वार्थ प्रधानता आदि अवगुणों को उत्पन्न करती है। ये निराशावादी स्वयं तो कुछ करते नहीं हैं, अपितु जो उत्साही, त्यागी तपस्वी, निष्ठावान्, समर्पित, कर्मठ कार्यकर्त्ता होते हैं, जो अपने तन-मन-धन सर्वस्व की आहुति देकर, भूखे-प्यासे रहकर, निन्दा-अपमान, विरोध-बाधा, अनेक प्रकार की प्रतिकूलताओं को प्रसन्नता पूर्वक सहन करते हुए दिन-रात, निष्काम भावना से सर्वहितकारी श्रेष्ठ कार्यों को सम्पन्न करते रहते हैं, उनको हतोत्साहित करते हैं, उनका उपहास करते हैं, उनकी केवल त्रुटियों, न्यूनताओं, भूलों को ही देखते हैं और उन्हीं का सर्वत्र प्रचार करते रहते हैं, ऐसे व्यक्तियों को टीका-टिप्पणी, कटाक्ष किये बिना शान्ति नहीं मिलती है। ऐसे निराशावादी=नास्तिक, समाज-संगठन के लिए शत्रुओं से भी कहीं अधिक घातक होते हैं। ऐसे ही आन्तरिक निन्दकों के कारण समाज संगठन के सक्रिय कार्यकर्त्ता, घबराकर विवाद-विरोध-झगड़े से बचने के लिए चुपचार घर में जाकर, निष्क्रिय बनकर बैठ जाते हैं।

संगठन को निर्बल, विघटित, शिथिल करके उसे असफल बनाने में एक घातक दुष्प्रवृत्ति यह भी है कि मात्र सुनी-सुनाई, प्रमाणों से असिद्ध, अफवाह रूप में प्रचलित बातों को, सही मान लेना तथा इसके भयंकर परिणामों प्रभावों का विचार किए बिना सर्वत्र प्रचार कर देना, जबकि होना यह चाहिए कि जिस व्यक्ति या संगठन से सम्बन्धित बात हो, उससे पूर्व मिलकर स्पष्टीकरण कर लेवें। अन्यथा अप्रामाणिक मिथ्या बातों का, आवेश में आकर अतिशयोक्ति पूर्वक प्रचार करने से, संगठन में परस्पर श्रद्धा, प्रेम, विश्वास, सहयोग में कमी आती है और संगठन के सारे प्रयोजन असफल हो जाते हैं। अतः इस अत्यन्त विनाशक दुष्प्रवृत्ति को समाप्त करना मुख्य कार्य है।

संगठन को असफल बनाने में एक घातक परम्परा यह भी चल पड़ी है कि कोई एक व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह जब तक स्वयं संगठन में अधिकारी बने रहते हैं तब तब तो तन-मन-धन-समय सब कुछ लगाकर अनेक प्रकार के कष्टों को उठाकर भी पर्याप्त कार्य करते हैं किन्तु जिस दिन पद-अधिकार-दायित्व नहीं रहता है, तब वे संगठन में रहते हुए भी वर्तमान के कार्यकर्त्ताओं को सहयोग, समर्थन, प्रोत्साहन, शुभकामना, आशीर्वचन, धन्यवाद देने की बात दूर रही, वे नितान्त उपेक्षित, निष्क्रिय, मूकदर्शक बनकर घरों में बैठ जाते हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि वे संगठन में हैं ही नहीं, संगठन से उनका कोई लेना-देना नहीं है, कुछ भी कर्त्तव्य शेष नहीं रहा है। बल्कि कुछ तो वर्तमान के कार्यकर्त्ताओं-अधिकारियों का उनकी कार्यशैली का गौण-मुख्य का, प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूप से विरोध भी करते हैं, यह प्रवृत्ति-परम्परा भी संगठन के लिए महाघातक है, इस दुष्ट प्रवृत्ति को भी समूल नष्ट करना अति आवश्यक है।

हे देवाधिदेव महादेव! आप अपने कृपाकटाक्ष से हम आर्यों के मन-बुद्धि-अन्तःकरण को इतना पवित्र बना दो कि अपने ही नहीं परायों की भी सामान्य त्रुटियों, भूलों, न्यूनताओं, दोषों को देखकर उद्विग्न न हों, बल्कि सहन कर लेवें, अन्यों के गुणों, विशेषताओं, यशः, कीर्ति, प्रगति को जानकर मन में प्रसन्न हों। परस्पर एक-दूसरे की सहायता करें, बिना ही पद, प्रतिष्ठा, अधिकार, दायित्वों के निष्काम भाव से अपने पूर्ण सामर्थ्यानुसार सामाजिक सर्वहितकारी कार्यों में सर्व प्रकार से सहयोग करते व करवाते रहें, ऐसी श्रद्धा, निष्ठा, त्याग, तप, समर्पण की भावना हमारी आत्मा में भर दो यही वरदान आप से मांग रहे हैं, आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि आप शीघ्र ही इस प्रार्थना को पूरी करेंगे इसी भावना के साथ—

ज्ञानेश्वरार्यः

सूचना

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक पत्रिका सदस्यों को डाक द्वारा न मिलने की शिकायत डाक विभाग कार्यालय रोहतक मण्डल रोहतक को भेजी गई थी। डाक विभाग कार्यालय रोहतक से पत्रिका के सम्बन्ध में जो जवाब प्राप्त हुआ है उसे **'आर्य प्रतिनिधि'** साप्ताहिक पत्रिका में प्रकाशित किया जा रहा है। हम आशा करते हैं कि डाक विभाग पत्रिका न पहुंचने की शिकायत पर शीघ्र कार्यवाही करेगा तथा **'आर्य प्रतिनिधि'** साप्ताहिक के सदस्यों को पत्रिका समय पर मिलेगी।

Department of Posts, India
Office of the Superintendent of Post Offices Rohtak Division, Rohtak-124001

To

1. Sr. Postmaster Rohtak HO
2. Postmaster Bahadurgarh
3. SPM Jhajjar M.D.G
4. All Delivery SPMs in Dn.

No:- G/RTK/010/Arya Pratinidhi/2016-17 Dated at Rohtak, the 18.11.16.

Sub:- Regarding alleged non-delivery of "Arya Pratinidhi" magazine.

On the above cited subject it is informed that Editor of Arya Pratinidhi informed to this office that many complaints are being received regularly regarding non-delivery of "Arya Pratinidhi" magazine to the customers.

It is therefore requested to please instruct the concerned postman, GDS to ensure proper& timely delivery of said magazine and keep proper watch over receipt of the above said magazine so that public complaint may be avoided.

Superintendent of Post Offices,
Rohtak Division, Rohtak-124001

Copy to:- Sh. Rampal Arya editor "Arya Pratinidhi" weekly Daya Nand Math Rohtak for information w.r.t his letter dated 17.11.16

www.thearyasamaj.org

प्रबल राष्ट्रवाद के पर्याय : प्रो. बलराज मधोक

❑ इन्द्रजित्देव

श्री बलराज मधोक का निधन हो गया। 96 वर्ष पूर्व उनका जन्म वर्तमान पाकिस्तान के गुजरांवाला नगर के निकट जल्लन ग्राम में हुआ था। उनका पूरा परिवार आर्यसमाजी था। जिस दिन लाला लाजपतराय का बलिदान हुआ उस दिन उनके परिवार में भोजन नहीं बना था। उनके पिता जी दिनभर उदास रहे व बोले—''आज भारत का सूर्य अस्त हो गया।'' पिताजी कश्मीर जम्मू के डोगरा-राज्यकाल में शासकीय कर्मचारी थे। पिताजी अपने विद्यार्थी काल में ही आर्यसमाज के प्रभाव में आ गए थे। महर्षि दयानन्द के जीवन और सिद्धान्त उनके आदर्श थे। बी.ए. उत्तीर्ण करने के पश्चात् पिताजी को डाकघर विभाग में इन्स्पेक्टर के पद के लिए चुना गया था परन्तु साक्षात्कार के अवसर पर उन्होंने उच्च अंग्रेज अधिकारी द्वारा पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में यह सच्चाई बताई कि उन्होंने 'सत्यार्थप्रकाश' पढ़ा है तो उनका चयन ही नहीं किया गया। तब उन्होंने संकल्प कर लिया कि वे अंग्रेजी शासन की नौकरी नहीं करेंगे।

श्रीनगर में रहते बलराज मधोक का सम्पर्क पंडित विश्वबन्धु से हुआ जिनका उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे आर्यसमाज हजूरी बाग़ के पुरोहित थे। तब वह आर्यसमाज श्रीनगर के ग़ैर कश्मीरी हिन्दुओं की धार्मिक व सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र था। श्री चिरंजीलाल वानप्रस्थी इस आर्यसमाज के प्रधान व बलराज मधोक के पिता श्री जगन्नाथ इसके मंत्री थे। पूरा परिवार प्रत्येक सत्संग में वहाँ जाया करता था। श्री बलराज मधोक के अपने शब्दों में—''महर्षि दयानन्द के जीवन चरित को पढ़ने का मुझे उन्हीं दिनों सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनकी हर बात बुद्धि और तर्क से परखने पर बल देना, उनकी सत्यनिष्ठा, निर्भीकता, देशप्रेम और आत्मविश्वास आर्यसमाजियों के जीवन में भी टपकता था। मेरे पूज्य पिताजी में भी ये गुण उत्तम रूप में विद्यमान थे। मुझे अपने श्रीनगर के दिनों में उनके साथ-साथ आर्यसमाज के अनेक गुरुजनों को देखने और उनके संपर्क में आने का अवसर मिला। उन सबका और आर्यसमाज के वातावरण का मेरे जीवन पर गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा।'' बलराज मधोक ने एम.ए. की परीक्षा इतिहास विषय में उत्तीर्ण की तो पी-एच.डी. करने का भी विचार किया और **'स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योगदान'** विषय चुनकर शोधकार्य भी आरम्भ कर दिया परन्तु 1946 के बाद देश का राजनैतिक चक्र इतनी तेजी से चलने लगा कि उन्हें अपना सारा समय स्वयं सेवक संघ और राजनैतिक गतिविधियों पर केन्द्रित करना पड़ा।

तब लाहौर का डी.ए.वी. महाविद्यालय पंजाब की एक प्रमुख शिक्षण संस्था थी। इसमें लगभग 4,000 विद्यार्थी अध्ययनरत थे। महाविद्यालय और इससे सम्बद्ध अन्य संस्थाएं तथा आवास गृह लगभग एक वर्गमील क्षेत्र में फैले थे। अपने परिसर के विस्तार तथा विद्यार्थियों की संख्या की दृष्टि से यह महाविद्यालय उस समय के अलीगढ़ विश्वविद्यालय से कहीं बड़ा था। देश विभाजन के समय बलराज मधोक ने यह सुझाव दिया था कि अलीगढ़ विश्वविद्यालय के परिसर और डी.ए.वी. महाविद्यालय के परिसर की अदला-बदली कर ली जाए। विभाजन के बाद अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के 80 प्रतिशत मुस्लिम विद्यार्थी और प्राध्यापक पाकिस्तान में जा बसे थे। विभाजन से पूर्व यह विश्वविद्यालय पाकिस्तान के पक्ष की गतिविधियों तथा मुस्लिम साम्प्रदायिकता का सबसे बड़ा अड्डा था। इसे बन्द करके इसका परिसर डी.ए.वी. महाविद्यालय लाहौर को देना सर्वथा उचित व राष्ट्रहित में होता परन्तु जवाहरलाल नेहरू और मौलाना आजाद को यह रुचिकर व उपयोगी नहीं लगा। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अब पुन: बहुत बड़ा विषवृक्ष बन चुका है। बलराज मधोक का उक्त सुझाव यदि मान लिया गया होता तो आज स्थिति सर्वथा अच्छी होती। बलराज मधोक की दूरदृष्टि होती थी, इस घटना से स्पष्ट प्रमाणित होता है।

जब 1980 में इन्दिरा गान्धी दोबारा सत्तासीन हुईं तो अलीगढ़ में एक हिन्दू विश्वविद्यालय स्थापित करने की पूरी तैयारियाँ पूर्ण हो चुकी थीं परन्तु संजय गांधी की मृत्यु होने से यह योजना रोक दी गई थी। मधोक जी को इसके भूमि पूजन के अवसर पर आमन्त्रित किया गया था।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की सैनिक शिक्षा, सैनिक गणवेश व कालिज के अपने साथियों ने उनको आकर्षित किया। वे उसके सदस्य बने। इसकी शाखाओं में नियमित जाने लगे व लाला लाजपतराय, बालगंगाधर तिलक, विपिनचन्द्र पाल व वीर सावरकर के राजनैतिक विचारों का प्रभाव बलराज मधोक पर पड़ता गया। वे सक्रिय राजनीति में प्रविष्ट हुए। भाई परमानन्द से भी वे मिलते रहे जिनका यह विचार अपने दीर्घ अनुभवों के आधार पर बना था—''हिन्दू समाज एक मरता हुआ समाज है। इसे अपने और पराए की, मित्र और शत्रु की पहचान नहीं...। इसमें जाति-पाति और भाषा-भेद इतना अधिक है और हिन्दुत्व की भावना इतनी दुर्बल है कि हिन्दू के नाते यह समाज न कुछ सोच सकता है, न ही कुछ कर सकता है।''

इस प्रकार के वैचारिक उथल-पुथल में बलराज मधोक ने संघ का पूर्णकालिक कार्य करने वाला प्रचारक बनने का निर्णय किया। इसके साथ ही वे सनातन धर्म कालिज लाहौर, आत्मानन्द जैन कालिज अम्बाला तथा डी.ए.वी. कालिज श्रीनगर में इतिहास के प्राध्यापक के रूप में भी क्रमश: कार्य करते रहे। श्रीनगर में रहते उन्होंने संघ के स्वयंसेवकों का सक्रिय जाल बिछाया। संघ यदि उस समय सक्रिय राजनीति में कूद पड़ता तो भारत के इतिहास में यह एक निर्णायक भूमिका अदा कर पाता, यह बलराज मधोक का विचार था। उनका यह भी विचार था कि उस समय मात्र संघ ही ऐसी शक्ति थी जो देश को विभाजन की अग्नि से बचा सकता था परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। असंख्य हिन्दू नारियों को बचाने का प्रशंसनीय कार्य संघ ने किया परन्तु इसका नेतृत्व देश व हिन्दू समाज को उचित व आवश्यक मार्गदर्शन और दिशा न दे सका, ऐसा बलराज मधोक के विचार थे। उनका यह भी विचार था कि भारत की अखण्डता को बचाने के लिए पंजाब, सिन्ध, सीमा प्रान्त और पूर्वी बंगाल के राष्ट्रवादी देशभक्त हिन्दुओं को मौत के मुंह में जाने से बचाने को संघ जो भूमिका अदा कर सकता था, वह उसने नहीं की। उस समय यह एकमात्र शक्ति था जो देश को विभाजन की आग से बचा सकता था। यह ठीक है कि आग लग जाने के बाद इसके स्वयंसेवकों ने अपनी जान हथेली पर रखकर अंसख्य लोगों को जलती आग में से निकाला। इसके लिए स्थानीय प्रचारक और स्वयंसेवक प्रशंसा के पात्र हैं, परन्तु परीक्षा की उस घड़ी में संघ का नेतृत्व देश और हिन्दू समाज को उचित और आवश्यक मार्गदर्शन और दिशा न दे सका। मधोक जी का यह भी विचार था कि यदि संघ का हिन्दू महासभा से तालमेल न होता तो संभवत: हिन्दू महासभा देश विभाजन से पूर्व एक प्रबल राष्ट्रवादी हिन्दुत्ववादी राजनैतिक संगठन के रूप में उभर पाती और भारत की राजनीति को नया मोड़ दे पाती। हिन्दू हिन्दू का शत्रु निकला। संघ हिन्दू महासभा को तो खा गया परन्तु स्वयं कोई राजनैतिक दिशा न दे पाया।

जब अक्तूबर, 1948 में पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण किया, तब मधोक डी.ए.वी. कालिज, श्रीनगर में उपाचार्य व कश्मीर में संघ के प्रमुख थे। उनके नेतृत्व में संघ ने शानदार कार्य किया। 'शरणार्थी रिलीफ़ कमेटी' बनाकर उन्होंने विभाजन के कारण कश्मीर में आए शरणार्थी हिन्दुओं की आर्थिक व सामाजिक सहायता की। अन्य कई प्रकार के साहसिक कार्यों से सेना, महाराजा हरिसिंह व कश्मीर की प्रजा की विशिष्ट सहायता करते रहे। कबाइलियों के वेश में पाकिस्तानी सेना ने जम्मू-कश्मीर पर आक्रमण किया। महाराजा का एक दूत तब मधोक जी के घर आया व भारतीय सेना के आने तक श्रीनगर हवाई-अड्डे की सुरक्षा का प्रबन्ध करने का अनुरोध किया। लगभग 200 स्वयंसेवकों को एकत्रित करके रात-रात में हवाई पट्टी की मुरम्मत भी की। जब जवाहरलाल नेहरू ने शेख अब्दुल्ला को जम्मू-कश्मीर के प्रधानमंत्री के रूप में प्रजा की इच्छा के विपरीत स्थापित कर

क्रमश: पृष्ठ 8 पर.....

www.thearyasamaj.org

प्रबल राष्ट्रवाद के पर्याय.... पृष्ठ 7 का शेष....

दिया तो उसने बलराज मधोक व संघ के कार्यकर्त्ताओं को विशेष निशाना बनाया। शेख अब्दुल्ला ने उन्हें मरवाने की बात एक गुप्त बैठक में कही परन्तु प्रकट में उनके कश्मीर में रहने पर प्रतिबन्ध लगा दिया तथा वे अनेक कष्ट सहकर जम्मू में आ गए। ट्रकों, बसों तथा कई-कई किलोमीटर पैदल चलकर जम्मू पहुँचे। विस्तारभय से हमने उनकी कष्टकारी यात्रा को एक ही वाक्य में वर्णन किया है। जम्मू में आकर पं० प्रेमनाथ डोगरा की सहायता से प्रजा परिषद् नामक एक राजनैतिक संगठन की स्थापना की। तथा अब्दुल्ला के अत्याचारों व राष्ट्रद्रोह की गतिविधियों के विरुद्ध आवाज उठानी प्रारम्भ की। अब्दुल्ला ने उन्हें जम्मू से भी निष्कासित कर दिया। अत: वे दिल्ली में ही बसने को विवश हुए। उनके माता-पिता को भी जम्मू-कश्मीर छोड़ना पड़ा। इस प्रकार मधोक जी ने नए वलवलों से अपना नया राष्ट्रीय जीवन आरम्भ किया।

स्व० श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जब केन्द्रीय मंत्री पद का त्याग करके 'भारतीय जनसंघ' नामक एक नये राजनैतिक दल का गठन किया तो बलराज मधोक उसमें सक्रिय हुए। उक्त संगठन के संस्थापकों में उनका नाम भी सम्मिलित है। वे श्यामा प्रसाद मुखर्जी को अपना राजनैतिक गुरु मानते थे। उक्त दल ने जब कश्मीर आन्दोलन आरम्भ किया तो बलराज मधोक ने उसमें भी सक्रिय भाग लिया। तदनन्तर वे जनसंघ की गतिविधियों में अत्यन्त व्यस्त हुए तथा देशभर में इसके फैलाव के लिए यत्नशील रहे। दिल्ली से वे दो बार लोकसभा के सदस्य भी बने। प्रकाशवीर शास्त्री व डॉ० लालमनोहर लोहिया की तरह वे अपने तथ्यपरक, राष्ट्रवादी व अत्यन्त प्रभावशाली भाषणों से अन्य सदस्यों को अत्यन्त प्रभावित कर लेते थे। इन्दिरा गान्धी व जवाहरलाल नेहरू की नीतिगत व व्यवहारगत असंगतियों पर वे सटीक आलोचना करने में सिद्धहस्त थे। सन् 1962 ई० में जब हम चीन से पिटे व चीन ने हमारी 80,000 वर्गमील धरती हथिया ली थी तो लोकसभा में उन्होंने जवाहरलाल ने पूछा था—

न इधर-उधर की तू बात कर,
यह बता कि काफ़िले क्यों लुटे ?
हमें रहज़नी से गरज़ नहीं-
तेरी रहबरी का सवाल है।

रामजन्म भूमि, मथुरा की कृष्णजन्म भूमि व काशी में विश्वनाथ मन्दिर भूमि को हिन्दुओं को सौंप देने की मांग भी सर्वप्रथम लोकसभा में उन्होंने ही रखी थी जिसे भारतीय जनता पार्टी ने अपना चुनावी मुद्दा बना लिया। बलराज ने अन्य पुस्तकों के अतिरिक्त एक पुस्तक 'Indianisation' लिखी थी जिसमें भारतीय मुसलमानों को अपनी उपासना पद्धति को जारी रखते हुए भी पाकिस्तान व अन्य देशों के प्रति वफ़ादार न रहकर अपनी मातृभूमि भारत के प्रति सम्पूर्ण वफादार रहने की आवश्यकता, लाभ व उपायों आदि पर विचार दिए थे। दो उपन्यासों के अतिरिक्त राजनैतिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक विषयों पर हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रकाशित व चर्चित भी रहीं। वे दो बार दिल्ली से लोकसभा सदस्य बनकर पहुंचे थे। तीसरी बार सन् 1971 के मध्यावधि चुनाव में वोटों की गणना की धांधली की सहायता से पराजित कराया गया। वे कई वर्षों तक भारतीय जनसंघ के प्रधान भी रहे। परन्तु दीनदयाल उपाध्याय जी की रहस्यमयी हत्या में जनसंघ के उन नेताओं, जिनकी गर्दनें इन्दिरा गान्धी के हाथ में जा चुकी थीं, को अपना हथियार बनाकर बलराज मधोक को जनसंघ से निकलवाकर उनकी राजनैतिक सक्रियता तथा प्रतिष्ठा समाप्त करने की योजना सर्वोच्च राजनैतिक नेतृत्व ने बनाई और सन् 1973 में मधोक जी जनसंघ की प्राथमिक सदस्यता से भी हटा दिए गए।

सन् 1977 में जब लोकसभा के चुनाव हुए तो लोकसभा में जनता पार्टी के 75 प्रतिशत उम्मीदवार विजयी होकर पहुंचने में सफल हुए थे परन्तु जनसंघ, जो कि जनता पार्टी के घटकों में से एक था, ने मधोक जी को प्रत्याशी न स्वयं बनाया तथा न ही जनता पार्टी के दूसरे घटकों को उन्हें उम्मीदवार बनाने दिया। बलराज मधोक यदि पद व सुविधाओं के ही इच्छुक होते तो वे तब स्वतन्त्र प्रत्याशी के रूप में चुनाव में उतर सकते थे व सफल होकर लोकसभा में सदलता से पहुंच सकते थे। दिल्ली से वे पहले भी दो बार सरलता से सांसद चुने जा चुके थे तथा सन् 1975 से सन् 1977 तक 18 मास तक अन्य नेताओं की तरह आपात्काल में बन्दी जीवन व्यतीत कर चुके थे परन्तु उन्होंने ऐसा न करके राजनैतिक नैतिकता का परिचय दिया।

सन् 1977 में संजीव रेड्डी को राष्ट्रपति पद पर आसीन किया गया तो संजीव रेड्डी ने उन्हें राज्यसभा में मनोनीत सदस्य के रूप में प्रवेश कराने की पेशकश की, जो उनके लिए सम्मानजनक था परन्तु बलराज मधोक ने इसे स्वीकार नहीं किया व कहा कि मैं संघर्ष करके आगे बढ़ूंगा व मनोनीत सदस्य के रूप में राज्यसभा में जाना पसन्द नहीं करता। वे अपने नेतृत्व में राष्ट्रवादी हिन्दुत्ववादी सरकार बनाने का स्वप्न देखते थे। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की स्थापना भी मधोक जी ने ही की थी।

सन् 1965-66 में जो गोरक्षा आन्दोलन चला था, उसमें भी उन्होंने सक्रिय भाग लिया था व फरवरी 1967 में उनके ही नेतृत्व में जनसंघ ने लोकसभा में 35 सीटें प्राप्त कीं। अनेक प्रदेशों में कांग्रेस हारी थी। परिणाम स्वरूप कुछ प्रदेशों में संयुक्त विपक्षी दलों ने सरकारें बनाईं। केन्द्र में भी इन्दिरा गान्धी को कम्युनिष्टों व समाजवादी सदस्यों की सहायता से ही सरकार चलाने पर विवश होना पड़ा था।

वे 'आर्गेनाइज़र', 'वैचारिक विकल्प' तथा 'हिन्दू वर्ल्ड' के कई वर्षों तक सम्पादक रहे। जनता पार्टी की सरकार ने जब अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना की तो इसके दूरगामी विघटनकारी परिणामों का अनुमान लगाकर इसका विरोध बलराज मधोक ने किया तथा मानवाधिकार आयोग की स्थापना की जोरदार मांग की परन्तु उनकी मांग नहीं मानी गई। उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरार जी देसाई से भी इस आयोग की स्थापना न करने के लिए कहा तो मोरार जी ने कहा था—"मैं सभी घटकों की पारस्परिक सहमति से बना प्रधानमंत्री हूँ। मेरी संगठन कांग्रेस के केवल 50 सदस्य ही हैं। यदि आपके जनसंघी साथियों ने इस आयोग की स्थापना का विरोध किया होता तो मेरे हाथ मजबूत होते व मैं अल्पसंख्यक आयोग के सम्बन्ध में निर्णय बदल देता।"

राष्ट्रवादी व मानवतावादी दृष्टिकोण की उपेक्षा देखकर बलराज मधोक ने सन् 1979 में जनता पार्टी से त्यागपत्र दे दिया। सन् 1980 ई० में उनकी पुस्तक 'रेशनल ऑफ़ हिन्दू स्टेट' अर्थात् 'हिन्दू राज्य का तार्किक औचित्य' छपी व तहलका मच गया। सभी दलों के 35 मुस्लिम सांसदों ने इस पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगाने की इन्दिरा गांधी से मांग की। इन्दिरा गांधी ने स्वयं इस पुस्तक को पढ़कर इसे प्रतिबन्धित करने से इंकार कर दिया। प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने यह भी कहा कि यह पुस्तक प्रत्येक भारतीय को पढ़नी चाहिए।

कुछ दिनों पश्चात् उक्त पुस्तक में दिए तर्कों, तथ्यों व सुझावों से प्रभावित इन्दिरा गांधी ने तब बलराज मधोक को अपने मन्त्रिमण्डल में सम्मिलित होकर सरकार के एक प्रतिष्ठित अंग के रूप में अपनी सोच को कार्य रूप देने की पेशकश की जिसे उन्होंने स्वीकार नहीं किया। वे इसे स्वीकार कर लेते तो देश का भविष्य क्या बनता, यह गम्भीर विषय विचारणीय है।

वे भारत माता के सच्चे सपूत थे। उनकी भारत-भक्ति ग़ज़ब थी। वे आजीवन भारत के लिए सोचते रहे, कर्म करते रहे। उनकी वीरता, विद्वत्ता, सैद्धान्तिक दृढ़ता तथा भारतमाता के प्रति निष्ठा अनुकरणीय है। उनका देहान्त 2 मई, 2016 को 96 वर्ष की अवस्था में हुआ जो उनकी संयमी एवं भारतीय जीवन शैली में जीने का प्रमाण है।

संपर्क-चूना भट्ठियां, सिटी सेंटर के निकट, यमुनानगर 09466123677

सदस्यता शुल्क भेजें

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि वे अपना वार्षिक शुल्क भी तत्काल भिजवाने की कृपा करें जिससे उनको 'आर्य प्रतिनिधि' नियमित प्राप्त होता रहे। शुल्क सम्बन्धी जानकारी के लिए व्यवस्थापक श्री रघुवरदत्त से मोबाइल नं० 07206865945 फोन नं० 01262-216222 से सम्पर्क करें।

-सम्पादक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।